रचनाकार-परिचय और संपर्क

आलोक टंडन समाज-दर्शन के स्वतंत्र अध्येता हैं। dralokboi@yahoo.com

अरुण कुमार नॉटिंघम विश्वविद्यालय, इंग्लैंड में ब्रिटिश साम्राज्य, औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक इतिहास विभाग में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। arun.kumar2@nottingham.ac.uk

अश्वनी कुमार कमला रहेजा स्कूल ऑफ़ आर्किटेक्चर से पढ़ाई करने के बाद हैं और मुंबई स्थित आर्किटेक्ट व ग्राफ़िक डिज़ाइनर हैं। ashwani.kumar18899@gmail.com

कमल नयन चौबे यूट्यूब पर चिंतनपरक कार्यक्रम 'परख' चलाते हैं; दिल्ली विश्वविद्यालय के दयाल सिंह कॉलेज में राजनीतिशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। kamalnayanchoubey@gmail.com

कमल मिश्रा दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से हाल ही में पीएचडी पूरी की है। kissakhwar@gmail.com

कुँवर प्रांजल सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग में सहायक प्राध्यापक हैं। pranjal695@gmail.com

चंदन शर्मा सराय और भारतीय भाषा कार्यक्रम, विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएस-डीएस) के अभिन्न अंग हैं। chandan_sharma@csds.in

चारु गुप्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में वरिष्ठ प्रोफ़ेसर हैं। charugup7@gmail.com

जोएल ली विलियम्स कॉलेज, मैसाचुसेट्स, यू.एस. ए. में सामाजिक मानवशास्त्र विभाग में पढ़ाते हैं। jl20@williams.edu

तिमसाल मसूद लेखक और अनुवादक हैं, कोलंबिया विश्वविद्यालय में हिंदी और उर्दू पढ़ाते हैं। tm3212@columbia.edu

दिनेश कुमार दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद दिल्ली में रहते हुए स्वंतत्र लेखन और अनुवाद करते हैं। dkmr1989@gmail.com

दीपमाला मिथिला चित्रकला शैली की उभरती हुई कलाकार हैं। मधुबनी और दिल्ली के बीच आवाजाही करती रहती हैं। deepmaharajaknits@gmail.com

देवनाथ पाठक दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफ़ेसर हैं। dev@soc.sau.ac.in

धनंजय सिंह डॉ. एस. आर. के. गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज यानम पुडुचेरी में अस्सिटेंट प्रोफ़ेसर हैं। djdu25@yahoo.com

नीता कोली देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। neetakoli2011@gmail.com

प्रभात कुमार विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस) में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। prabhat@csds.in

प्रवीण कुमार झा पेशे से विशेषज्ञ चिकित्सक हैं, संगीत, ख़ासकर ध्रुपद में विशेष रुचि है।

24 sandarbh_Layout 1 08-02-2024 18:49 Page 484

doctorjha@gmail.com

महिका पार्थियाल जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पीएचडी कर रही हैं। mahikaphartiyal96@gmail.com

मनोज मोहन दिल्ली स्थित सांस्कृतिक पत्रकार हैं। manojmohan2828@gmail.com

मृत्युंजय आलोचक, कवि और अनुवादक हैं और दिल्ली में रहते हुए स्वतंत्र लेखन करते हैं। mrityubodh@gmail.com

मृत्युंजय चटर्जी दिल्ली स्थित कलाकार और डिज़ाइनर हैं। mrityunjay.chatterjee@gmail.com

मोना दास सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। contactmona@gmail.com

रबि प्रकाश स्कूल ऑफ़ लिबरल आर्ट्स ऐंड साइंस, जेएनयू में अस्सिटेंट प्रोफ़ेसर हैं। rprakash.rabi@gmail.com

रविकान्त मीडिया इतिहासकार और विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। ravikant@csds.in

वागीश शुक्ल भारतीय शास्त्रीय परंपरा और साहित्य के वरिष्ठ आलोचक आजकल दिल्ली में रहते हैं। wagishs@yahoo.com

वेंकटेश कुमार लेखन को पूर्णकालिक पेशा बना चुके हैं, आजकल साहित्य और इतिहास के प्रश्नों पर अनुसंधानरत हैं। venkydu@gmail.com

संजीव कुमार टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज से अध्ययन करने के बाद स्वतंत्र पत्रकार और शोधकर्ता हैं। subaltern1@gmail.com

सौम्या गुप्ता जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज इतिहास विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। saumya.saumyagupta@gmail.com

सुमित उज्जैनवाल वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ़ ओपन लर्निंग में अध्यापन कर रहे हैं। sumit1986aujainwal@gmail.com

शिखा झींगन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में सिनेमा अध्ययन विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। shikha.jhingan@gmail.com

शुभनीत कौशिक इतिहास विभाग, सतीश चंद्र कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हैं। shubhneetkaushik@gmail.com

हिलाल अहमद राजनीतिशास्त्री और विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। hilal@csds.in

प्रतिमान के लिए संदर्भ-साँचा

हिंदी के शोध-संसार में वैसे तो अब लोग बड़े पैमाने पर संदर्भन करने लगे हैं, लेकिन अराजकता या उदासीनता अभी-भी कम नहीं है। हमारी कोशिश होगी कि लम्बे अरसे में विकसित और निहायत लोकप्रिय शिकागो या हार्वर्ड मैनुअल जैसी वैश्विक संदर्भन प्रणालियों का मूलतः इस्तेमाल करते हुए उसे भाषा के स्थानीय व्यवहार के मुताबिक़ अनुकूलित करें। लेखक/लेखिकाओं से अपील है कि वे अपने आलेख का शब्द-संयोजन करते वक़्त इन चीज़ों का ख़याल ज़रूर रखें, ताकि हमें सम्पादन में और सजग पाठकों को पढ़ने में कम मेहनत करनी पड़े। शोधपत्र में नाना प्रकार के स्रोतों को संदर्भित करने का तरीक़ा नीचे मिसाल दे कर सिलसिलेवार समझाया गया है।

ख़याल रहे कि कुछ मामलों में हमारा तरीक़ा इन तरीक़ों से अलग है। पहली बात, हम मूल आलेख में संदर्भ न डालकर फ़ुटनोट का इस्तेमाल करेंगे, और लेख के आख़िर में एक ग्रंथ-सूची देंगे। दूसरी बात, हम फ़ुटनोट व ग्रंथावली दोनों ही जगहों पर डॉट का इस्तेमाल करेंगे, जबकि मूल आलेख में पूर्ण विराम का। और, हमारे यहाँ जैसा रिवाज है नाम वैसे ही रखेंगे, यानी पहले पहला नाम, फिर उपनाम, और ग्रंथावली भी हिंदी वर्णक्रमानुसार इसी ढर्रे पर चलेगी। हमारे यहाँ लेखक अपने नाम के पहले डॉक्टर/डॉ. या प्रोफ़ेसर/प्रो. लगाते देखे गये हैं, हम उनके छोटे रूप से भी परहेज़ करेंगे, सिवाय प्राथमिक स्रोतों के, जैसे मोती बी.ए. अगर अपने तख़ल्लुस के साथ लिखते थे तो हम उनकी तमाम रचनाएँ मोती बी.ए. के नाम से ही डालेंगे। संक्षेप में नाम लिखते समय डॉट का प्रयोग करें और स्पेस न दें, जैसे : जी.पी. श्रीवास्तव, न कि जी. पी. श्रीवास्तव। विख्यात संस्थाओं या देशों के नाम लिखते समय डॉट लगाने की आवश्यकता नहीं है, जैसे : यूनेस्को, न कि यू.एन.ई.एस.सी.ओ.; या यूके, न कि यू.के.।

हम नुक़्ते का प्रयोग भी करेंगे, क्योंकि यह कुछ अंग्रेज़ी और उर्दू शब्दों के लिए ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर, ज़ुल्फ़िक़ार बुख़ारी, ज़िज़ेक, ज़ीटीवी, क़यामत, फ़रमाइश, ग़ज़ल, ख़याल, वग़ैरह। उसी तरह, हम हमेशा अर्धचंद्र या चंद्र बिंदु का इस्तेमाल करेंगे, जहाँ भी लगता है, जैसे कि 'फ़ुटबॉल' या 'ऑल इंडिया रेडियो' या फिर 'हँसना' या 'पाँच' में। ख़याल रहे कि अगर किसी भी उद्धृत दस्तावेज़ में अगर नुक़्ते / चंद्र बिंदु का इस्तेमाल मूल में नहीं हुआ है तो हम अपनी तरफ़ से न लगाएँ। उसी तरह अगर देसी पंचांग / संवत् का प्रयोग हुआ है तो उसी का इस्तेमाल करें। जहाँ तारीख़ साफ़ नहीं / अनुपलब्ध है, वहाँ इसका ज़िक्र ज़रूर हो। कोलन या विसर्ग लगाते समय ध्यान रखें कि उसके दोनों तरफ़ स्पेस हो। हाँ, अगर किसी अंक के तुरंत बाद विसर्ग लगाया जा रहा है तो स्पेस केवल उसके बाद आएगा। हर जगह अरबी अंकों यानी 1, 2, 3, 4 आदि का प्रयोग करें।

फ़ुटनोट में किताब के संदर्भन का क्रम :

पाद-टिप्पणी के रूप में संदर्भ का संक्षिप्त रूप इस्तेमाल किया जाएगा, लेकिन पृष्ठ संख्या अवश्य लिखी जाएगी। जैसे : लेखक का नाम (कोष्ठक में प्रकाशन का वर्ष) : पृष्ठ संख्या.

मिसाल : सुमित सरकार (1985) : 21.

लेख के अंत में दी जाने वाली संदर्भ-सूची में किताब के सम्पूर्ण संदर्भन का क्रम :

सुमित सरकार (1985), *मॉडर्न इंडिया : 1885–1947,* मैकमिलन, लंदन.
ज़ाहिर है कि यहाँ पृष्ठ संख्या नहीं देनी है।

अगर वही संदर्भ फ़ुटनोट में दोबारा आ रहा है, तो महज़ लेखक के नाम से काम चला सकते हैं, पर साथ में विसर्ग लगा कर पृष्ठ संख्या देना लाज़िमी होगा। अगर एक ही संदर्भ लगातार फ़ुटनोट में है, तो 'वही : पृष्ठ संख्या' से काम चल जाएगा। अगर पृष्ठ भी नहीं बदला तो सिर्फ़ 'वही' पर्याप्त होगा। अगर लेखकों या सम्पादकों के दो नाम हैं तो पूरे जाएँगे, अगर दो से ज़्यादा, तो दोनों के बाद वग़ैरह लगाएँ। लेकिन पहले फ़ुटनोट और ग्रंथ-सूची में सारे नाम, पूरे जाएँगे। अगर किताब के एक से ज़्यादा संस्करण छप चुकी है तो जिस संस्करण का इस्तेमाल हुआ है, उसके ज़िक्र के साथ कोष्ठक में मूल प्रकाशन का साल भी जाएगा। अगर एक ही रचनाकार की एक नाम से एक ही साल की दो शीर्षक-रचनाएँ उद्धृत की गयी हैं तो उनके हवाले में भेद करने के लिए फ़ुटनोट/ग्रंथावली में रचना के नाम के बाद प्रकाशन वर्ष के साथ क, ख...आदि लगाया जाए।

मिसाल :
रामचंद्र गुहा (1982 क), 'फ़ॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश ऐंड पोस्ट-ब्रिटिश इंडिया : अ हिस्टोरिकल एनालिसिस', *इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 18, अंक 44 : 1882–1896.
--------(1982 ख), 'फॉरेस्ट्री इन ब्रिटिश ऐंड पोस्ट-ब्रिटिश इंडिया : ए हिस्टोरिकल एनालिसिस', *इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 18, अंक 45 : 1940–1947.

अगर किताब अनूदित है तो अनुवादक का नाम फ़ुटनोट और ग्रंथावली में किताब के नाम के बाद कोष्ठक में आएगा :
मिसाल : मन्ना डे (2008), *यादें जी उठीं : एक आत्मकथा,* अंग्रेज़ी से अनुवाद : रक्षा शुक्ला, पेंगुइन बुक्स, नयी दिल्ली.

सम्पादित किताब में छपे लेख :
मिसाल : हरीश त्रिवेदी, 'ऑल काइंड्स ऑफ़ हिंदी : दि इवॉल्विंग लैंग्वेज ऑफ़ हिंदी सिनेमा', आशिस नंदी व विनय लाल (सं.), *फ़िंगरप्रिंटिंग पॉपुलर कल्चर : द मिथिक ऐंड दि आइकॉनिक इन इंडियन सिनेमा,* ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली : 51–86.

जर्नल-आदि में छपे लेख :
रचनाकार (प्रकाशन वर्ष), 'लेख का नाम', पत्र का नाम, खण्ड, अंक, किस पृष्ठ से किस पृष्ठ तक, आख़िर में अगर ख़ास पृष्ठ का ज़िक्र करना हो तो :
मिसाल : प्रेमलता वर्मा (2001), 'इब्ने-मरियम हुआ करे कोई', *बहुवचन,* वर्ष 2, अंक 8 (जुलाई-सितम्बर) : 110–128, 115.

पत्रिका के आलेख :

मिसाल : बजरंग बिहारी तिवारी (2012), 'केरल में दलित आंदोलन और दलित साहित्य', *कथादेश,* वर्ष 32 : अंक 5 (जुलाई) : 76.

अख़बार में छपी रचना या रपट :

लेख : दीपानिता नाथ, 'रेडियो रिवाइंड', *आई : द संडे एक्सप्रेस,* नयी दिल्ली, 10 अगस्त, 2008.

रपट : 'यह क्षेत्र हिंदी में संकट का समय : असगर', *जनसत्ता* (2005), दिल्ली, 20 मार्च : 7.

छपे हुए साक्षात्कार के हवाले के लिए : साक्षात्कार देने वाले का नाम > शीर्षक व बातचीत करने वाले का नाम उद्धरण चिह्नों के बीच > किताब है तो लेखक से शुरू करके किताब वाला संदर्भन, अगर पत्रिका है तो पत्रिका वाला।

मिसाल : विश्वनाथ त्रिपाठी, 'रामविलास शर्मा 1950 में बीटीआर वाले माने जाते थे' : अजेय कुमार से बातचीत, *उद्भावना* (रामविलास शर्मा महाविशेषांक : (सं.) प्रदीप कुमार), अंक 104 : 199

अगर बातचीत ख़ुद लेखक/लेखिका ने की है तो ज़िक्र यूँ होगा : लेखक/लेखिका द्वारा साक्षात्कार, 13 अक्टूबर, 2005, नयी दिल्ली.

अभिलेखागार की सामग्री का हवाला :

होम डिपार्टमेंट, 42–48/नवम्बर 1916, ए. जेल्स, नेशनल आर्काइव्ज़ ऑफ़ इंडिया, (आगे एनएआई).

अदालती मामलों / फ़ैसलों का हवाला यूँ दिया जाएगा :

ऑल इंडिया आईटीडीसी वर्कर्स यूनियन एवं अन्य बनाम आईटीडीसी एवं अन्य, (2006). 2007एआईआर 301, (2006) 10 एससीसी 66.

विश्वव्यापी वेब से ली गयी सामग्री का हवाला यूँ दिया जाएगा :

मिसाल : विकीपीडिया पर 'पान सिंह तोमर' :

http://en.wikipedia.org/wiki/Paan_Singh_Tomar; 28 जुलाई 2012 को देखा गया.

अगर प्रविष्टि हिंदी में है तो उसे हिंदी में दिखाएँ : http://hi.wikipedia.org/wiki/राजेश खन्ना. कई बार वेब पतों से नक़ल-चेपी करते हुए भारतीय भाषाओं की लिपि बदलकर अबूझ हो जाती है, जिससे बचने का उपाय यह है कि अंग्रेज़ी वेब-पते की नक़ल-चेपी करते समय देसी सामग्री को यथावत अपने वर्ड प्रोसेसर में अलग से टंकित करें.

चलती का नाम गाड़ी, पार्ट-4: यूट्यूब :

http://www.youtube.com/watch?v=KWqkCpybNLo

&feature=g-vrec; 30 जुलाई 2010 को संदर्भानुसार देखा/सुना/पढ़ा गया.

अगर लेख फ़िल्म-केंद्रित है, तो ग्रंथावली के साथ फ़िल्मावली भी देनी होगी, जिसमें फ़िल्म का नाम, साथ में निर्माता/निर्देशक और रिलीज़ हुए साल का ज़िक्र ज़रूरी होगा।

मिसाल : *अब दिल्ली* दूर *नहीं,* आरके फ़िल्म्स, निर्देशक : अमर कुमार, 1957. लेकिन मूल आलेख में ब्रैकेट में सिर्फ़ फ़िल्म का नाम व रिलीज़ वर्ष के ज़िक्र से काम चल जाएगा : (*अब दिल्ली* दूर *नहीं,* 1957).

24 sandarbh_Layout 1 08-02-2024 18:49 Page 488

भारतीय भाषा कार्यक्रम

पिछले तक़रीबन बीस साल से **विकासशील समाज अध्ययन पीठ** (सीएसडीएस) का **भारतीय भाषा कार्यक्रम** समाज-विज्ञान और मानविकी में हिंदी के चिंतन-जगत को समृद्ध करने की परियोजना चला रहा है। अभी तक चार ग्रंथमालाओं (लोक-चिंतन ग्रंथमाला, लोक-चिंतक ग्रंथमाला, सामयिक विमर्श ग्रंथमाला और सरोकार ग्रंथमाला) के तहत वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पंद्रह से ज़्यादा पुस्तकों का बड़े पैमाने पर स्वागत हुआ है। इन ग्रंथमालाओं के तहत लोकतंत्र, भूमण्डलीकरण, दलित और आधुनिकता, सेकुलरवाद, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रवाद, राजनीतिक प्रणाली, नारीवाद और सेक्शुअलिटी जैसे विषयों पर उच्चकोटि की सामग्री प्रकाशित की गयी है। अपने शुरुआती वर्षों में कार्यक्रम का ज़ोर अंग्रेज़ी में उपलब्ध समाज-चिंतन की उच्च-स्तरीय रचनाओं को अनुवाद और सम्पादन के ज़रिये हिंदी में लाने पर था। बाद में इस कार्यक्रम ने अंग्रेज़ी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में भी अनुसंधानपरक समाज-चिंतन और उसके साथ जुड़ी हुई ज्ञानमीमांसक चुनौतियों से जुड़े प्रश्नों पर समग्र रूप से विचार करना शुरू किया। इसीलिए अंग्रेज़ी से अनुवाद और सम्पादन की प्रक्रियाओं को दी गयी प्रमुखता क़ायम रखते हुए अब यह कार्यक्रम हिंदी में अनुसंधानपरक समाज-चिंतन के मूल लेखन को प्रोत्साहन देने पर केंद्रित है। समाज-विज्ञान और मानविकी की पूर्व-समीक्षित पत्रिका ***प्रतिमान समय समाज संस्कृति*** का प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया एक अहम क़दम है जिसकी परिणति आगे चल कर अनुसंधान और लेखन की एक सघन और बहुमुखी योजना में होगी। फ़िलहाल परियोजना हिंदी-जगत तक सीमित है, लेकिन जल्दी ही अन्य भारतीय भाषाओं में पहलक़दमियाँ लेने की कोशिशें की जाएँगी।